REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

''पवित्र बाईबल मृत्यू के बारेमें क्या शिकाती हे''

वळवी विश्वास गोरखनाथ
संशोधक विध्यार्थी सामाजिक शास्त्रे प्रशाळा, इतिहास विभाग, कबचौउमवि, जळगाव.

प्रस्तावना:-

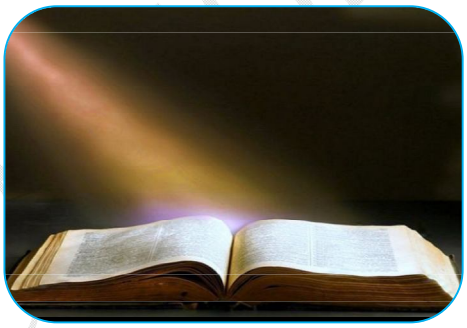

परमेश्वर के संत की मृत्यु मृत्यु क्या हे *चार्ल्स स्विड्ल* लिखते है "मृत्यु एक जीवन का हिस्सा ह'' और जिसे हरएक मनुष्य को अनुभव करना हे.मृत्यु नए जीवन को मौका देती है,मसीह के मृत्यु ने अनंत जीवन की आशा दी ,मसीह समुदाय अपने किसी भी सदस्य को मृत्यु द्वारा खोता नही मृत्यु के बाद जीवन नही है पर मृत्यु के द्वारा जीवन है" और यही मसिह समाज को जिने का बल प्रधान करता हे,हमे संत पौल केहेता हे मेरा जिना मसिह हे और मरणा मेरे लिये लाभ.मृत्यू जीवन कि सुरुवात हे इसलिये हमे आशा हे कि परमेश्वर हमे शारीरिक मृत्यू के बाद अनंतकालका जीवन प्रधान करनेवाले हे.*युरिपिड्स* ने कहा है ."मृत्यु एक कर्जा है जिसे हम सभी को चुकाना है".जीवन मी सुख-दुख आते रहेगे क्युकी जीवन मृत्यू कि राख पर फैला हुआ कण हे.जो मरनेके बाद फिरसे जीवन उत्पन्न करता हे.पॉल-शी-योंग कहते हे ''परमेश्वर के उद्देश्य से चूकना ही पाप हे''मतलब परमेश्वर के उद्देश्य को जो मसीह पूरा करता हे और मृत्यु को प्राप्त होता हे!तो वह एक मसीह के लिये अनंतकालीन विजय है.तो मृत्यू क्या हे? मृत्यु स्वर्ग में जानेका सर्वोत्तम मार्ग हे.

१) पवित्र बाइबल में बहुतसे लोंगो ने मृत्यु की मांग की:-

सुकरात ने कहा अपने को जानो यह ज्ञान है.

सिसेरो ने कहा अपने को नियंत्रण करो यह आत्म संयम है.

यीशु ने कहा अपने को दो यह स्वय-त्याग है.

१) **योना**:- *"मेरे लिए जीवन से अच्छा मरना है"* योना ने परमेश्वर से मृत्यु की मांग कि,उसे सबक भी मिला.उसे नही पता था भविष्य में उसका मसली के पेट मे रहना आज पुनरुत्थान का उद्धरण बन जाएगा.योना अन्यजाती के लोगोको परेमेश्वर का वचन देणे गया,पश्चाताप और पाप से फिरणा,लोगोने वो किया,

२) **मूसा** :- "और जो तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले" (गिनती:-११-१५).मुसा इस्राएल लोगोका सबसे बडा अगुवा था,पर लोगोकी खाणे-पिणे कि आदते,परमेश्वर कि निंदा,आज्ञा तोडणा,पाप मे डुबे रेहेना,इस्राएल कि इन बातोकी वजेसे मुसा ने परमेश्वर से मृत्यू कि मांग कि.

मूसा परमेश्वर के पूर्ण अधीन था इसलिए परमेश्वरने उसकी कब्र को छुपा दिया,मूसा मसीह इतिहास में अमूल्य है.

३) **अय्यूब** :- *"पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छुटा"* अय्यूब को परमेश्वर पर भरोसा था वो परमेश्वर को दोष नही देना चाहता था.इसलिए उसने अपने जन्म को दोष दिया.अय्युब के मित्रोनेभी उसे दोष देना सुरु कर दिया था.इतनी बडी शिक्षा परमेश्वर किसी पापी व्यक्ती को हि डे शकता हे,इसलिये तुझे पश्चाताप करके अपने पापोसें तोबा करणा होगा ऐसे उसके मित्र अय्युब को केहेते हे.पर अय्युब सिर्फ

परमेश्वर पर भरोसा रखता हे.

४) **एलिय्याह** :- _ *"है यहोवा बस ,अब मेरा प्राण ले ले,क्योंकि में अपने पूरखों से अच्छा नही हु"*_ (१ राजा:-१९-४) उस समय करीबन साथ हजार भविष्यवक्ता थे लेकिन परमेश्वर ने एलिय्याह को अपने कार्य के लिए चुना,वो इतना अमूल्य था कि सशरीर परमेश्वर ने उसे उठा लिया.एलीय्याह परमेश्वर का भय मानणेवाला नबी था.परमेश्वर उसे प्यार करते थे.

५) **पौलुस:-** *" क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ"* (२करिन्थ:-५-८) मिशनरी चळवळ का दाता जीसे परमेश्वर ने अपने कार्य के लिए चुना,अपने कार्य की दौड़ पूरी करके अनंत जीवन के मुकुट को प्राप्त किया.आधुनिक कालीसिया का संस्थापक जिसने मसिह धर्म को अपने उच्चायियो पर रख दिया.परमेश्वर ने उसे चुना था और वही उसे अपने उद्देश तक पोहोचणेवाला भी.

२):- मृत्यु क्या है? हम *मसीह लेखको और मिशनरीयोके* अनेकों उद्धरण से ये सीखेगे:-

१) **मैथ्यू हेन्री** :-*"मृत्यु कड़वी होती है!मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मेरे पास आंतरिक मदद हैं"*_

मृत्यु कड़वी है लेकिन परमेश्वर का वचन और आत्मा हमे इस मृत्यु को अपने आगोश में लेने के लिए मदत करती है *उदा:- पोलीकार्प* आग की जलती लपेटे उसका शरीर जला न सकी

२) **मार्टिन लूथर** :- _ *"हमारा परमेश्वर,वह परमेश्वर है ,जिससे उद्धार आता है,परमेश्वर वह प्रभु है,जिसके माध्यम से हम मृत्यु से बचते है"*_ मृत्यु क्या है? प्रोटेस्टेंट करने के बाद जब लूथर को इक्विनिस में बुलाया गया तब शरीर की मृत्यु का भय भूलकर, लूथर ने मृत्यु की राख पर खड़े होकर आत्मा में अपना पक्ष रखा.

३) **जॉन नॉक्स:-** *"मसीह में जियो,मसीह में जियो और शरीर को मृत्यु से डरने की जरूरत नही"*_ हम अगर पवित्र आत्मा के चलाये चलते है तो हम आत्मिक मनुष्य है,हमारा शारीरिक मृत्यु का भय अपने आप मिट जाता है.

४) **जॉन वेस्ली**:-"सबसे उत्तम बात यह है कि परमेश्वर हमारे साथ है,अलविदा अलविदा"_ जब हम यहा पृथ्वीपर आँख बंद करेंगे हमारी आँखे स्वर्ग में प्रभु के सामने खुलेगी.इसलिये में एक मसीह होकर विश्वास से अपनी मृत्यु को अलविदा कहता हूं.

५) **रिचर्ड बैक्सटर:-**"मुझे पीड़ा है;परन्तु मुझे शांति है!मेरे पास शांति है"_ परमेश्वर के लोगोके लिए मृत्यु वो शांति है जिसे दुनियादारी नही दे शकती.

६) **विलियम कैरी:-**"जब में चला जाऊँगा,तब डॉ कैरी के बारे में कम और डॉ कैरी के उद्धारकर्ता के बारे में अधिक बात करें और प्रचार करें"_ आज हम विलियम कैरी को याद करेगें लेकिन परमेश्वर के प्रचार के साथ.

७) **डी. एल.मुडी**:-"यह मेरी विजय है;यह मेरे लीये महिमायुक्त दिन है"_ एक मसीह जब अपनी मृत्यु को आते देखता है तो स्टीपनस की तरहा स्वर्ग खुला हुआ मसीह को निहारता है.जिसका बीज पौलुस का कार्य है.विश्वास की लड़ाई में अनेकों मसीही लोगोने मसीह के लिए शहीद होकर अनंत जीवन को प्राप्त किया.

८) **ट्रायन एडवर्ड:-** "यह जगत मरने वालों की भूमि है,दूसरा जगत जीवितों की भूमि है"_ *मसीह ने कहा तुम जगत में हो पर जगत के नही* हमारा देश जिसे हम सियोन कहते है,वहा हमे जाना है.

९) **चार्ल्स स्विडल:-**"नए जीवन के बीज मृत्यु की राख द्वारे फैलाये गये है"_ बीज के समान मरकर हम पश्चाताप करके नया जीवन पाते है.मृत्यु की राख पर जीवन के कण फैले हुए है.जो मसीह में है वह नया है पुराना चला गया.

१०) **थॉमस फलर:-**जिसने अच्छे से मरना नही जाना वह अच्छे से नही जिया"_ में मसीह के मृत्यु में शामिल होकर ख़ुद के स्व को मारे बगैर मसीह में जी नही शकता.

११) **विक्टर ह्यूगो:-**"मेरे सिर पर शीतकाल है,पर मेरे दिल मे अनंत बसंत है,जैसे जैसे मै अंत के पास आता जाता हूं वैसे वैसे मैं उस संसार के अमर संगीत को सुनता जाता हूं"ये मृत्यु का संगीत नही,ये वो नरसिंगा है जो हमारे जिवनोके के लिए बजाया जायेगा.हमारी मृत्यु के बाद का ये स्वर्ग प्रवेश का संगीत है जो हमारे अनंत जीवन का फरमान जाहिर करता है.

३) मृत्यु क्या है? मृत्यु के बारेमें पवित्र बाइबल क्या कहती है?:-

यदि कोई विचार पवित्रशास्त्र संमत होना चाहता हे,उसमे त्रीएकत्ववाद कि प्रवृत्ती कम होती हे,जो विचार स्वंतत्र होने का दावा करता हे वह एकात्म्वादी होगा'' **-मोबरले**

मृत्यु हमे परमेश्वर के पास ले जाती है,हम देखते है एलिय्याह, हनोख,और मसीह सशरीर स्वर्ग में उठा लिए गए.सुलेमान* कहता है "मृत्यु के दिन जन्म के दिन से उत्तम है" जन्म हमारी उद्देश्य की सुरुवात और मृत्यु हमारे अनंतजीवन की* मसीह ने कहा है "जो मुझ पर विश्वास करता है यदि वह मर भी जाए तो वह जीवित रहेगा...उसके पास अनंत जीवन होगा और अंतिम दिन मैं उसे जिलाउगा".येशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेल मिलाप हुआ है_ (*रोमी:-५-१०*) पाप से हम परमेश्वर से दूर हो गए थे.लेकिन हमारा मेल परमेश्वर से हुआ है,और जब हम मृत्यु को प्राप्त करेंगे हम पिता के गोद मे होंगे. *जेम्स हैमिल्टन* _" लिखते है "पूरा जीवन मृत्यु की परिधि से घिरा है,पर जो यीशु पर विश्वास करते है,वे इस परिधि के बाहर अनंत जीवन को पाते है!उसको केवल एक बार मरना था ताकि मृत्यु का काम तमाम कर दे!मृत्यु का अचानक आ जाना,अनजाना सा रहस्य,मृत्यु का भय उत्पन्न करता है,इस भय के द्वारा शैतान ने मनुष्य को अपने दासत्व में रखा है.आज दुनिया मे शैतान ने बहुतसे लोगोंको भय का आतंक दिखाया है,उन्हें मृत्यु के भय से बचाने के लिए परमेश्वर ने हमारी मसीह में बुलाहट की है.यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है.परमेश्वर उसके भक्तो को प्रेम करता है. परमेश्वर बिना अपना उद्देश्य पूरा किये उसके भक्तो को बुलाता नही है.इसलिए अपना कार्य जारी रखे. *रेव्ह एनन* लिखते है _"जहाँ मृत्यु आपको पाती ही वहाँ अनंत आपको बांध लेता है"_ मृत्यु के बाद परमेश्वर अपने भक्तों को पकड़ लेते है और स्वर्ग में आनंद का जल्लोष होता है.मृत्यु स्वर्ग में खुशियां मनाने का त्यौहार है. *यशायाह* ने कहा "धर्मी जन इसलिये उठा लिया गया कि आने वाली विपत्ति से बच जाए वह शांति को पहुँचता है.जो सीधी चाल चलता है वह अपनी खाट पर विश्राम करता है.क्योंकि एक मसीह के पास शांतिमय विश्वास होता है कि उसकी देह अंत एक नया आरम्भ है!जब हमारा पार्थिव डेरा नष्ट हो जाता है तो हम प्रभु के पास रहने चले जाते है...ताकि वह जो मरनहार है जीवन मे डूब जाए.और तब हमें उस आत्मिक मृत्यु से नही जाना पड़ेगा जो दूसरी मृत्यु अर्थात नरक की सनातन की आग है.चन्द्रकुमार मणिक्कम लिखते है"असली मृत्यु जो मनुष्य को पकड़ी है वह देह की नही पर नैतिक और आत्मिक है!मृत्यु की भयानक तस्वीर यह बताती है और उसके बिना हम कितने आशाहीन है.अंतिम बात *जय ने मृत्यु को निगल लिया है.

मृत्यू मे जीवन क्या हे? और बाईबल क्या बताती हे:-

''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलोता पुत्र दे दिया ताकी जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए''

१	**परमेश्वर**	**सबसे बडा प्रेमी**
२	**जगत से**	**सभी लोग**
3	**ऐसा प्रेम किया**	**चरम सीमा तक**
४	**इकलोता पुत्र**	**सबसे बडा दान**
5	**उसने दे दिया**	**सबसे बडा कार्य**
६	**ताकी जो कोई**	**सबसे बडा निमंत्रण**
७	**उस पर**	**सबसे बडा व्यक्ती**
८	**विश्वास करे**	**सबसे सरल बात**
९	**नाश न हो**	**सबसे बडा छुटकारा**
१०	**परन्तु**	**सबसे बडा अंतर**
११	**अनन्त जीवन**	**सबसे बडा धन**
१२	**पाए**	**सबसे बडी निश्चितता**

(***ये टेबल,आप कोण हे?आप कहा जा रहे हे? चंद्रकुमार मनिक्कम इनके पुस्तकसे लीया गया हे,पृ क्र.७२***)

निष्कर्ष:-

मृत्यू असल मे जीवन का स्त्रोत हे.जीवन का आरंभ हे जैसे हमे पवित्र बाईबल शिकाती हे.मृत्यू ने मसिह लोगोको अपने सर्वोच्य शिखर पर रखा हे.इसलिए आज मसिह समाज संपूर्ण दुनिया मी अपने चरमसीमा पर हे,मानवकल्याण और भक्तीभाव से मसिह समाज मृत्यू से लीपटकर कार्यरत हे.उदहरण के तौर पर मिशनरी.मिशनरी लोगोने परमेश्वर का वचन प्रचारित करनेके लिये अपने स्व का बलिदान दिया,अपने भौतिक सुखोका बलिदान दिया क्युकी उन्हे मसिह का बलिदान सारे जगत को बताना था,परमेश्वर का सारे जगत को बताना था.पाप से संपूर्ण मानवजातीको मुक्त करना था.इसलिये बहुतसे मिशनरी लोगोने अपने प्राण को भी नौसावर कर दिया.क्युकी उनका मानणा था कि मृत्यू के बाद एक और जीवन हे,जिसमे हम परमेश्वर कि महिमा कर सकेगे.

संदर्भ ग्रंथसूची:-

१) १ करिन्थ १५-५४,नवा करार.पवित्र बायबल
२) यशायाह:-५७:१-2,जुना करार.पवित्र बायबल
३) २करिन्थ:-५:-४-नवा करार,पवित्र बायबल
४) प्रकाशित वाक्य:-२०-६-नवा करार,पवित्र बायबल
५) इब्रीकरास पत्र-२-१५-नवा करार,पवित्र बायबल
६) भजन:-११६-१५-जुना करार,पवित्र बायबल
७) आप कोण हे?और कहा जा रहे हे? चंद्रकुमार मनिक्क्म,जी-एस-प्रकाशन,हेद्राबाद २०१७
८) यूहन्नारचित सुसामाचार-६:३९-४०-पवित्र बायबल
९) यूहन्नारचित सुसामाचार-3-१६ -पवित्र बायबल

LBP PUBLICATION